परिचर्चा एवं राजयोग रिट्रीटः

प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक संसाधनों के द्वारा संपूर्ण ग्राम विकास

ब्रह्माकुमारीज़ ग्राम विकास प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर माउण्ट आबू में 20 से 24 जून, 2014 तक आयोजित परिचर्चा एवं राजयोग रिट्रीट सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस कार्यक्रम में भारत के चारों ओर के 750 ग्रामीण विकास तथा कृषि क्षेत्र से संलग्न अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक, एन.जी.ओ. तथा विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व रहा। उद्घाटन सत्र में महाराष्ट्र कृषि शिक्षा अनुसंधान परिषद महानिदेशक मारुती सावंत ने कहा कि कृषि पर निर्भर रहने वाले गांववासियों को रसायनिक खादों का उपयोग बंद कर्े जैविक / यौगिक खेती के माध्यम से कृषि उपज बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए।

गुजरात के दाहोद एन.एम.सदगुरु फाउन्डेशन निदेशक हरनाथ जगावत ने कहा कि रासायनिक खाद के उपयोग से कैन्सर जैसी व्याधियों में वृद्धि हो रही है। चरित्रवान किसान आध्यात्मयुक्त यौगिक खेती के जरिए प्राचीन कृषि व्यवस्था के अनुरूप कृषि गतिविधियों के बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाकर किसान समृद्ध बन सकता है। आदिवासियों के जरिए कृषि में एक नई क्रान्ति ला सकते हैं।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका सरला बहन ने इस संगोष्ठी का लक्ष्य और उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि पहले जमाने में लोभ वृत्ति व स्वार्थ वृत्ति नहीं थी बल्कि समर्थ और श्रेष्ठ संकल्पों से प्रकृति का संवर्धन होता था। जैविक खाद के उपयोग से अनाज की पौष्टिकता भी उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

मुख्यालय संयोजक राजू भाई ने कहा कि प्रकृति के नज़दीक रहने वाले आदिवासी ग्रामीण प्राकृतिक परिवर्तन के बारे में वैज्ञानिकों की अपेक्षा ज्यादा जानकारी रखते हैं। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए अपील की। विकास के पथ को बुराइयाँ रोक रही है। इस पर विजय प्राप्त करने का हल आध्यात्मिकता है। ऐसी आध्यात्मिक जीवन शैली को अपनाकर के जीवन को महान बनायेंगे। प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित करने के लिए पहले अपने जीवन और चरित्र का उत्थान जरूरी है। हमारी भावनाएं, आन्तरिक शुद्ध संकल्पों की शक्ति वायुमण्डल अथवा प्रकृति को परिवर्तन करती है।

कार्यक्रम में बिहार से पधारी वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका रानी दीदी ने शुभ कामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि विचारों के बीज बोये। यदि मन, वचन, कर्म में पवित्रता प्रकट होगी तो प्रकृति के साथ अपने आप सम्बन्ध जुड़ जाता है और प्रकृति हमें समय पर सहयोग देती है।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष मृत्युंजय भाई ने कहा कि ग्रामीण जीवनशैली को पाश्चात्य संस्कृति का ग्रहण लग चुका है। पांचों तत्वों को प्रदूषित बनाने का कारण है अन्दर का अशुद्धिकरण यदि हम अपने विवेक को जागृत करेंगे तो प्रकृति को मनुष्य जीवन के साथ सुंदर प्रकृति का समन्वय स्थापित कर सकते हैं।

राजस्थान के अलवर से पधारे ममता बहन ने कहा कि विकास की शुरुवात एक एक व्यक्ति से होगी तो संपूर्ण ग्राम विकास अपने आप ही होगा। आध्यात्मिक विज्ञान के द्वारा ही हर मनुष्य का मन, हर मनुष्य की आत्मा जागृत होने लगती है। जब आध्यात्मिक विज्ञान इन्सान के रग रग में पहुंचेगा, हर एक भारतवासी तक पहुंचेगा तो निश्चित एक संपूर्ण विकास का सूर्योदय होता देख सकेंगे।

पलवल से पधारे प्रभाग के एक्जिक्यूटिव सदस्य राजेन्द्र भाई ने सबका आभार व्यक्त किया। भीनमाल की गीता बहन ने बहुत सुंदर रूप से मंच संचालन किया।

कृषि वैज्ञानिकों की विशेष संगोष्ठी: "जॉइनिंग हैन्ड्स फार ससटेनबल अग्रिकल्चर" में सभी वैज्ञानिकों ने बड़े उमंग उत्साह से भाग लिया। 70 कृषि वैज्ञानिकों ने भारत भर में चल रहे इस अभियान को सहयोग देने का संकल्प लिया। किसानों को, विभिन्न विश्वविद्यालयों में, अनुसंधान क्षेत्रों में यौगिक कृषि को आगे बढ़ाने के लिए रोडमैप बनाई। यह वैज्ञानिक यौगिक खेती के विभिन्न अनुसंधान एवं किसानों के अनुभवों से लाभान्वित हुए। विशेष प्रेरणायें प्राप्त करके सभी वैज्ञानिक एकमत होकर यौगिक कृषि को एक सृजनात्मक कदम के रूप में स्वीकार करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से अनुरोध करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया गया।

समापन सत्र: आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक संसाधनों के द्वारा स्वर्णिम भारत का निर्माण

झारखंड ग्रामीण विकास मंत्रालय स्पेशल सेक्रेटरी बी.निजलिंगप्पा ने कहा कि राष्ट्र को समृद्धि, खुशहाल व स्वस्थ बनाने में गामीणों की अहम् भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति की धरोहर गांवों के विकास में कोई लापरवाही नही बरती जानी चाहिए। उन्होंने जंगलों को बचाने पर जोर दिया। यौगिक खेती परियोजना से ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा किए जा रहे सेवाओं की सराहना की।

सरदार कृषिनगर दांतीवाडा कृषि विश्व विद्यालय के वैज्ञानिक दिनेश भाई पटेल ने गत पांच वर्षों से हो रही यौगिक खेती पर किए जा रहे अनुसंधान की जानकारी देते हुए कहा कि शाश्वत यौगिक खेती के जरिए रासायनिक खादों के उपयोग की अपेक्षा बेहतर परिणाम प्राप्त हुए हैं।

ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बी.के.सरला बहन ने कहा कि भौतिक विकास की चकाचौंध में अपने आपको पहचानो तो आध्यात्मिकता द्वारा हर समस्या का समाधान हो जायेगा। जीवन मूल्यों से सुसर्जित होने से प्राकृतिक संसाधनों को सहज सुरक्षित रख सकते हैं। पवित्रता की शक्ति ही इस संसार का मार्गदर्शन करा सकता है और प्रकृति का संवर्धन करने में सहयोग दे सकती है। शाश्वत यौगिक खेती के क्रियान्वयन से अनाज पौष्टिक तत्वों से भरपूर हो सकता है।

इचलकरंजी से आए यौगिक कृषि के विशेषज्ञ बालासाहेब ने कहा कि गांव को आदर्श बनाने, स्वच्छता अभियान चलाने, गांववासियों की आंतरिक क्षमता को जगाने, किसानों को यौगिक खेती को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। देश के कई गांवों में गांववासियों को बहुत अच्छी सफलता मिली है।

हांसी से पधारी बी.के.लक्ष्मी बहन ने प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए अनेक उपाय बताये। जीवन मूल्यों को ऊंचा उठाने से असंभव कार्य भी संभव हो सकता है। प्रकृति को कलुशित व दूषित होने से बचाने के लिए आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाना चाहिए जिससे प्रकृति भी संपन्न-सतोप्रधान बन सकती है। प्रकृति हमें सुख देती है इसलिए मानव को उसे प्रदूषित करने से बचना चाहिए।

अन्त में दिल्ली से आये बी.के.सतवीर भाई तथा बी.के स्वाती बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के दौरान भावनगर के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। जीवन में खुशली – गाँव में हरयिाली विषय पर बी.के.पीयूष भाई ने सबको प्रेरणाये दी। ग्रामीण महिला

सशक्तिकरण, तथा ग्राम विकास में रचनात्मकता आदि विषयों पर भी संगोष्ठियां हुई। राजयोग सत्रों में भी सभी ने उमंग-उत्साह से भाग लिया।